

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 9

जो बीत गयी

(हरिवंश राय बच्चन (1907-2003))

भाग – 2

अभ्यासमाला

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

बोध एवं विचार —

1. सही विकल्प का चयन करो :—

(क) कवि हरिवंशराय बच्चन का जन्म हुआ था-

(अ) सन् 1905 में

(आ) सन् 1906 में

(इ) सन् 1907 में

(ई) सन् 1908 में

(ख) कवि ने इस कविता में बीती बात को भूला कर क्या करने का संदेश दिया है-

(अ) वर्तमान की चिंता

(आ) भविष्य की चिंता

(इ) अतीत की चिंता

(ई) सुख की चिंता

2. संक्षेप में उत्तर दो -

(क) अपने प्रिय तारों के टूट जाने पर क्या अंबर कभी शोक मनाता है ?

2. संक्षेप में उत्तर दो -

(क) अपने प्रिय तारों के टूट जाने पर क्या अंबर कभी शोक मनाता है ?

उत्तर : नहीं। अपने प्रिय तारों के टूट जाने पर अंबर कभी शोक नहीं मनाता।

(ख) हमें मधुवन और मदिरालय से क्या शिक्षा मिलती है ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) हमें मधुवन और मदिरालय से क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर : हमें मधुवन और मदिरालय से यह शिक्षा मिलती है कि जिस प्रकार मधुवन अपने प्रिय फूलों के सूखने अथवा मुरझा जाने पर भी कभी शोर नहीं मचाता तथा मदिरालय भी अपने प्यालों के टूट जाने पर कभी पछतावा नहीं करता । उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन के किसी प्रिय चीज के खो जाने पर दुखी होने के बजाय वर्तमान जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास करना चाहिए ।

(ग) कवि ने 'अंबर के आनन' को देखने की बात क्यों की है ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) कवि ने 'अंबर के आनन' को देखने की बात क्यों की है ?

उत्तर : कवि ने 'अंबर के आनन' को इसलिए देखने को कहा कि अंबर अपने बेहद प्यारे तारे को टूटे हुए देखकर भी शोक नहीं मनाता हैं । अतः मनुष्य को अपने दुःखों को यादकर के शोक मनाना अच्छी बात नहीं है। मनुष्य को निर्विकार चित्त का ही अधिकारी होना चाहिए।

(घ) प्यालों के टूट जाने पर मदिरालय क्यों नहीं पश्चात्ताप करता ?



(घ) प्यालों के टूट जाने पर मदिरालय क्यों नहीं पश्चात्ताप करता ?

उत्तर : प्यालों के टूट जाने पर मदिरालय इसलिए पश्चात्ताप नहीं करता क्योंकि मृदु मिट्टी से बने हुए प्याले लघु जीवन लेकर आए हैं। इससे मदिरालय में दारु पीनेवालों का अभाव नहीं होता, मधु के घट का भी कमी नहीं होता। मादकता के मारे लोग मदिरालय को नहीं छोड़ सकता। अतः मदिरालय को पश्चात्ताप करने की जरुरत नहीं है ।

(ङ) मधु के घट और प्यालों से किन लोगों का लगाव होता है ?



(ङ) मधु के घट और प्यालों से किन लोगों का लगाव होता है ?

उत्तर : मधु के घट और प्यालों से उन लोगों का लगाव होता है जो मादकता के मारे हैं। ऐसे लोग मधु लूटा ही करते हैं। उन्हें मधु के घट और प्यालों से इतना लगाव होता है कि किसी न किसी तरह मधु प्राप्त कर लेते हैं।

(च) 'जो मादकता के मारे हैं, वे मधु लूटा ही करते हैं।' इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(च) 'जो मादकता के मारे हैं, वे मधु लूटा ही करते हैं।' इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर : 'जो मादकता के मारे हैं, वे मधु लूटा ही करते हैं।' इसमें कवि यह कहना चाहते हैं कि मादकता के मारे लोग मदिरालय को नहीं छोड़ सकता। वे मदिरा को किसी न किसी तरह प्राप्त कर ही लेते है । उसी तरह जिन लोगों को जीने का तरीका आता है, वे दुःख की परिस्थिति में भी खुशी ढूंढ़ ही लेते हैं। ऐसे लोग बीती बातों को याद करने के बजाय वर्तमान को लेकर आगे बढ़ते हैं ।

(छ) उक्त कविता में मानव जीवन की तुलना किन-किन चीजों से की गई है ? सोदाहरण उत्तर दो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(छ) उक्त कविता में मानव जीवन की तुलना किन-किन चीजों से की गई है ? सोदाहरण उत्तर दो।

उत्तर : उक्त कविता में मानव जीवन की तुलना आकाश में टूटते तारों, उपवन में मुरझा कर गिरते फूलों, मदिरालय के प्यालों से की गई है।

जिस तरह अबंर अपने टूटे तारों पर कभी शोक नहीं मनाता। उसी तरह मानव को भी अपने अतीत को लेकर शोक में नहीं रहना चाहिए। कवि ने उपवन का उदाहरण पेश करते हुए कहा है कि अपने प्रिय फूलों के सूखने अथवा मुरझा जाने पर मधुवन कभी शोर नहीं मचाता।

मनुष्य को भी अपनी बीती बातों को लेकर शोर मचाने के स्थान पर वर्तमान में जीना चाहिए। कवि ने मानव जीवन की तुलना मदिरालय से भी की है। जिस प्रकार मदिरालय के आंगन में अनेक प्याले हिलते हैं और टूटकर बिखर जाते हैं, पर मदिरालय वैसे ही चलता रहता है। उसी प्रकार मनुष्य को अपने बिखरे हुए सपनों में दुखी होने की बजाय वर्तमान जीवन को रंगीन बनाना चाहिए।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ज) इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?



(ज) इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर : इस कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को अपने-बीते हुए दुःखो को भुल जाना चाहिए। अपने दुःखों को स्मरण कर शोक में समय बिताना अच्छी बात नहीं है। हमें वर्तमान की सुखों को लेकर ही जीवन का आनन्द लेनी चाहिए।

3. सप्रसंग व्याख्या करो :—

(क) जीवन में एक सितारा था,
माना वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो।

3. सप्रसंग व्याख्या करो :—

(क) जीवन में एक सितारा था,
माना वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो।

उत्तर : संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठय पुस्तक 'आलोक' भाग-२ के अन्तर्गत कवि हरिवंश राय बच्चन विरचित शिक्षाप्रद कविता "जो बीत गयी" से ली गयी है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रसंग - इसमें कवि ने मनुष्य जीवन को आकाश के माध्यम से शिक्षा देने का प्रयास किया है।

व्याख्या - कवि कहना चाहते हैं कि जिन तारों के कारण आकाश जगमगाता है, वह आकाश का बेहद प्यारा होता है। पर वह डूब (टूट) जाने पर आकाश का दीप्ति भी चला जाता हैं। तब भी आकाश निर्विकार रहता है। अपने बाकी बचे तारों के साथ चमकते रहते हें । कवि ने मनुष्य को भी आकाश की तरह-अविचल रहने का परामर्श दिया है।

(ख) मृदु मिट्टी के हैं बने हुए,
मधु घट फूटा ही करते हैं,
लघु जीवन लेकर आए हैं,
प्याले फूटा ही करते हैं।



(ख) मृदु मिट्टी के हैं बने हुए,
मधु घट फूटा ही करते हैं,
लघु जीवन लेकर आए हैं,
प्याले फूटा ही करते हैं।

उत्तर :

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक' भाग-२ के अन्तर्गत कवि हरिवंश राय बच्चन विरचित शिक्षाप्रद कविता "जो बीत गयी" से ली गयी है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रसंग - इसमें कवि ने मनुष्य जीवन को मधुघट और मधुप्याले से तुलना करते हुए जीवन की मादकता के बारे में बताया है।

व्याख्या - कवि के अनुसार मधुघट कोमल मिट्टी द्वारा बनाया जाता है। यह मिट्टी पर गिरकर टूट जाते हैं। इसका स्थायित्व कम है। लेकिन इस विषय पर मधुशाला कभी दुःख प्रकट नहीं करता है। क्योंकि प्याला जैसी क्षणस्थायी वस्तु टूट तो जाएगा ही। इसी तरह अपने दुःख को याद कर शोक मनाने से अच्छा है कि हम जीवन के बाकी समय को सुखपूर्वक बिताए ।